"मंदा फिका - बोल"

- भंड जमीऐ भंड निमीऐ भंडि मंगण वीआह । भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु । भंड मुआ भंड भालीऐ भंड होवै बंधान ।

अर्थः- स्त्री से जनम लेते हैं, स्त्री के पेट में ही प्राणी का शरीर बनता है । स्त्री के ही द्वारा मंगनी और विवाह होता है । स्त्री के द्वारा और लोगों से संबंध बनता है और स्त्री से ही जगत की उत्पत्ति का रास्ता चलता है । अगर स्त्री मर जाए तो और स्त्री की तलाश करते हैं, स्त्री से ही औरों से रिश्तेदारी बनती है ।

सो किउ मंदा आखीऐ जित जमहि राजान । भंडहु ही भंड ऊपजै भंडै बाझु न कोई ।

अर्थः- जिस स्त्री जाति से राजा भी पैदा होते हैं, उसे बुरा कहना ठीक नहीं है । स्त्री से ही स्त्री पैदा होती है जगत में कोई भी जीव - स्त्री के बिना पैदा नहीं हो सकता ।

नानक भंडै बाहरा एको सचा सोई । जित मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चार । नानक ते मुख ऊजले तित सचै दरबार ।2। पउड़ी ।

अर्थः- हे नानक ! केवल एक सच्चा प्रभु ही है, जो स्त्री से पैदा नहीं हुआ । चाहे मनुष्य हो, चाहे स्त्री, जो भी अपने मुंह से सदा प्रभु के गुण गाता है, उसके माथे पे भाग्यों की मणि है, भाव उनका माथा भाग्यशाली है । हे नानक ! वही मुख उस सच्चे प्रभु के दरबार में सुंदर लगते हैं ।

- सभ को आखै आपणा जिस नाही सो चुणि कडीऐ । कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ।

अर्थः- जगत में हरेक जीव को ममता लगी हुई है । जिसे ममता नहीं वह चुन के अलग दिखा दो, भाव, कोई विरला ही है जिसे ममता नहीं है । अपने - अपने किए कर्मों का लेखा खुद ही भरना पड़ता है ।

जा रहणा नाही ऐत जगि ता काइत गारबि हंढीऐ । मंदा किसे न आखीऐ पड़ि अखर एहो बुझीऐ । मूरखै नालि न लुझीऐ ।

अर्थः- जब इस जगत में सदा रहना ही नहीं है, तो क्यूँ अहंकार में खपना ? भाव, उपदेश पढ़ के समझ लें कि किसी को भी बुरा नहीं कहना चाहिए और मूर्ख के साथ उलझना नहीं चाहिए ।

नानक फिके बोलीऐ तन मन फिका होइ । फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोई ।

अर्थः- हे नानक ! जो मनुष्य रूखे वचन बोलता रहे, तो उसका तन और मन दोनों रूखे हो जाते हैं भाव, मनुष्य के अंदर से प्रेम खत्म हो जाता है । रूखा बोलने वाला लोगों में रूखा ही मशहूर हो जाता है और लोग भी उसे रूखे वचन से सदा याद करते हैं ।

फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाई । फिका मूरख आखीऐ पाणा लहै सजाइ ।1। मठ-1।

अर्थः- रूखा भाव, प्रेम से वचित मनुष्य प्रभु की दरगाह में रद्द हो जाता है और उसके मुंह पर थूकें ही पड़ती हैं भाव, धिक्कारें ही पड़ती हैं । प्रेम हीन रूखे मनुष्य को मूर्ख कहना चाहिए, प्रेम से वचित को जूतियों की मार पड़ती है भाव, हर जगह उसकी सदा बेइज्जती होती है ।

- अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैल । अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैल ।

अर्थः- जो मनुष्य मन से तो झूठे हैं, पर बाहर से झूठी इज्जत बनाए बैठे हैं, और जगत में दिखावा बनाए रखते हैं, वे चाहे अठारह तीर्थों पर जा के स्नान करें, उनके मन की कपट की मैल नहीं उतरती ।

जिन्ह पट अंदर बाहर गुदड़ ते भले संसार । तिन्ह नेह लगा रब सेती देखन्हे वीचार ।

अर्थः- जिस मनुष्यों के अंदर कोमलता और प्रेम रूपी पुट है, पर बाहर रूखापन रूपी गुदड़ी है, जगत में वह बंदे नेक हैं उनका रब के साथ नेह लगा हुआ है और वह ईश्वर का दीदार करने के विचार में ही सदा जुड़े रहते हैं ।

रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि । परवाह नाही किसै केरी बाझह सचे नाह ।

अर्थः- वह मनुष्य प्रभु के प्यार में रंगे हुए कभी हसते हैं, प्रेम में ही कभी रोते हैं, और प्रेम में ही कभी चुप भी कर जाते हैं भाव, प्रेम में ही मस्त रहते हैं उन्हें सच्चे पति प्रभु के बिना किसी और की अधीनता नहीं होती ।

दरि वाट उपर खरच मंगा जबै देइ त खाहि । दीबान एको कलम एका हमा तुम्हा मेल । दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेल ।2। पउड़ी ।

अर्थः- जिंदगी रूपी राह पर पड़े हुए वह मनुष्य ईश्वर के दर से ही नाम रूपी खुराक मांगते हैं, जब ईश्वर देता है तब खाते हैं । हे नानक ! उन्हें ये बात दृढ़ है कि प्रभु खुद ही फैसला करने वाला है और खुद ही लेखा लिखने वाला है, सारे अच्छे - बुरे जीवों का मेला उसी के दर पर होता है प्रभु सबसे किए कर्मों का लेखा मांगता है और बुरे मनुष्यों को ऐसे पीढ़ता है जैसे तेल । भाव, उनके बुरे संस्कार अंदर से निकालने के लिए उन्हें दुख रूपी कोल्हू में डाल के पीढ़ता है ।

आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ । देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ।

अर्थः- हे प्रभु ! तूने खुद ही ये सृष्टि रची है और तूने खुद ही इसमें जीवात्मा रूपी सत्ता डाली है । अच्छे - बुरे जीवों को पैदा करके, अपने पैदा किए हुओं की तू खुद ही संभाल कर रहा है ।

जो आइआ सो चलसी सभ कोई आई करीऐ । जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिब मनहु विसारीऐ । आपण हथी आपणा आपे ही काज सवारीऐ ।20।1 - 473-474।

अर्थः- हे भाई ! जिस प्रभु के दिए हुए ये शरीर और प्राण हैं, उस मालिक को मन से कभी नहीं भुलाना चाहिए । जब तक ये शरीर और प्राण

मिले हुए हैं, उद्यम कर के अपने हाथों से अपना काम आप ही सँवारना चाहिए भाव, ये मनुष्य जन्म हरि के स्मरण के साथ सफल करना चाहिए ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"